REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 9 | JUNE - 2024

खेलों मे पत्रकारिता की सम्भावनाऐं

डॉ. अनिरूद्ध कुमार दिवाकर
प्रवक्ता शारीरिक शिक्षा
फ.अ.अ. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
महमूदाबाद, सीतापुर (उ. प्र.)

आज के वर्तमान समय में देश विदेश में घटित हो रही विभिन्न घटनाओं की जानकारी हमें घर बैठे ही प्राप्त हो जाती है और यह सब पत्रकारिता के कारण ही सम्भव हो सका है। प्राचीन समय में विभिन्न घटनाओं की जानकारी एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के माध्ययम से होती थी। काई बार देखा गया हैं कि एक ही घटना को लेकर लोगो के अलग अलग मत हुआ करते थे, लोग एक ही घटना को अलग अलग तरीके से व्यक्त किया करते थे।

प्रारम्भ में पत्रकारिता का दायरा समाचार पत्रों और रेडियो तक ही सीमित था। वर्तमान समय मे इसमें काफी बदलाव आया और अब यह विभिन्न भाषाओं के समाचार पत्रों और रेडियो पर प्रसारित होने वाले समाचारों के साथ – साथ विभिन्न पत्रिकाओं, न्यूज चैनल, इन्टर नैट आदि में विस्तारित हो गया है। वास्तव में पत्रकारिता का कार्य विभिन्न घटनाओं की वास्तविकता व तथ्यों को, आवश्यक जानकारियों को आम जनता के लिए उपलब्ध कराना है। इन घटनाओं और जानकारियों को एकत्रित और संगठित कर आम जनता के लिए उपलब्ध करवाने वाले को पत्रकार कहा जाता है, यदि ये घटनाएँ और जानकारियाँ विभिन्न खेलों से सम्बन्धित हो तो वह खेल पत्रकारिता कहलाती है और इन घटनाओं और जानकारियों को एकत्रित करने वाले को खेल पत्रकार कहा जाता है।

विश्व में पत्रकारिता का शुभारम्भ पांचवी सदी के 'न्यूज बुलेटिन' से और प्रथम समाचार पत्र का प्रकाशन आठवीं शताब्दी में सम्राट जूलियस सीजर के 'एक्टा डायवर्ना' से माना जाता है। इसके बाद हॉलैण्ड ने 1690, ग्रेट ब्रिटेन ने 1702, रूस ने 1703 और भारत ने 1817 में पत्रकारिता के क्षेत्र में अपने – अपने देशों में इसकी शुरूआत की। भारत मे जब पत्रकारिता की शुरूआत हुई उस समय भारत अंग्रेजों का गुलाम था। उस समय पत्रकारिता का उद्देश्य आम जनता में आज़ादी के प्रति जागरुकता लाना, आज़ादी के सिपाहियों के बलिदान से लोगों को अवगत कराना तथा शासन की नीतियों की हकीकत को समाज के सामने लाना था। भारत मे समाचार पत्र का प्रकाशन सन 1779 को बम्बई के 'बाम्बे हेराल्ड' से प्रारम्भ हुआ। 26 जनवरी 1780 को अंग्रेजी के ही 'कैलकटा जरनल एडवाइजर' (हिकीज बंगला गजट) को सम्पादित करने वाले जेम्स आगस्टस हिक्कले को भारतीय पत्रकारिता का प्रथम स्तम्भ माना जाता है। 1784 में कलकत्ता के 'कैलकटा गजट' तथा फरवरी 1785 में टामस जोन्स ने 'बंगाल जनरल' निकाला। भारतीय भाषाओं के विद्वान जोशुआ मार्शमैन के सम्पादन में सीरामपुर कलकत्ता से बंगला मे प्रकाशित प्रथम समाचार पत्र 'दिग्दर्शन' ने इस यात्रा को आगे बढ़ाया। हुगली नगर से 'बंगाल गजट' (1817) और हिन्दी भाषा में 'दिग्दर्शन' अप्रैल 1817 में बैपटिस्ट मिशनरी जान क्लार्क मार्षमैन के सम्पादन में प्रकाशित हुआ।

सन 1930 में बम्बई से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र 'इंगलिश डेली' के द्वारा भारत मे खेल पत्रकारिता की शुरूआत हुई। इस समाचार पत्र ने खेलों से सम्बन्धित खबरों का एक पेज प्रकाशित किया जिसे लोगों ने काफी पसन्द किया। खेल पत्रकारिता प्रारम्भ में सभी समाचार पत्रों में शामिल नही थी, जैसे – जैसे

खेलों का प्रचलन बढ़ता गया इसमे रुचि लेने वालों की संख्या बढ़ती गई। लोग जितनी रुचि अन्य घटनाओं व जानकारियों को पढ़ने में लेते थे उतनी ही रुचि खेलों से सम्बन्धित खबरों को पढ़ने में लेने लगे। खेल पत्रकारिता के इतिहास में निर्णायक मोड तब आया जब सन् 1951 में भारत आयोजित प्रथम एशियाई के दौरान खेल पत्रकारिता को सबसे ज्यादा बढ़ावा मिला और धीरे – धीरे सभी समाचर पत्रों द्वारा इसे अपनाया जाने लगा। आज हर दैनिक, साप्ताहिक समाचार पत्र जैसे – दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, आज, अमर उजाला, प्रदेश टुडे, हिन्दुस्तान आादि में खेल पत्रकारिता हेतु एक पेज दिया गया है तो अंग्रजी के समाचार पत्र हिन्दुस्तान टाइम्स, टाइम्स ऑफ इण्डिया, द हिन्दू आदि मे खेल पत्रकारिता हेतु दो या तीन पेज निर्धारित किये गए है। खेलों के बढ़ते प्रचलन के कारण ही 80 के दशक से क्रीड़ा जगत की अलग – अलग खेल पत्रिकाओं जैसे खेल खिलाड़ी, क्रीड़ा लोक, क्रिकेट सम्राट, स्पोर्ट्स स्टार आदि का प्रकाषन प्रारम्भ हुआ तो 90 के दशक से कई स्पोर्ट्स चैनल जैसे ईएसपीएन, डी0 डी0 स्पोर्ट्स, नियो स्पोर्ट्स, स्टार क्रिकेट, स्टार स्पोर्ट्स टेन स्पोर्ट्स आदि प्रारम्भ हुए।

आज के समय में खेलों की बढ़ती लोकप्रियता के कारण खेलों में भी पत्रकारिता कि सम्भावनाऐं बढ़ने लगी हैं। खेलों मे पत्रकारिता के क्षेत्र निम्न है –

विभिन्न खेलों की जानकारियाँ

आज के समय में लोग विभिन्न खेलों और उनसे सम्बन्धित जानकारियों को पढ़ना पसन्द करते है। आम जनता को इस बात की जानकारी उपलब्ध करवाना कि कौन सा खेल या टूर्नामैन्ट कब, कहॉ, और किसके बीच खेला जायेगा। ये सभी सूचनाऐं खेल पत्रकारिता के क्षेत्र में आती हैं। खेलों की जानकारियाँ उपलब्ध कराते समय समाज की रुचि को ध्यान में रखने के साथ साथ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि आप एक ही खेल पर केन्द्रित न हो जाएं। समाज के कुछ वर्ग अन्य खेलों को पसन्द किया करते हैं इस बात को भी ध्यान मे रखना चाहिए।

खेलों के परिणाम की जानकारियाँ

विभिन्न खेलों के आयोजन की जानकारी देने के बाद जब तक उसके परिणाम की जानकारी उपलब्ध न करवा दी जाए तब तक प्रकाशित की गयी सूचना अधूरी समझी जाती हैं। इसलिए टूर्नामेन्ट के आयोजन के समय प्रथम मैच से लेकर फाइनल मैच का परिणाम घोषित होने तक सभी मैचों के परिणामों की जानकारी उपलब्ध करवानी चाहिए। किसी मैच या टूर्नामेन्ट के आयोजन की जानकारी पूर्व में दी गई है तो इसके परिणाम की सूचना अवश्य दी जानी चाहिए। टूर्नामेन्ट के फाइनल से पूर्व सभी मैचों के परिणाम की संक्षिप्त जानकारी उपलब्ध करवा देनी चाहिए ताकि किसी कारण से किसी को किसी मैच के परिणाम की जानकारी नही हो पाती है तो फाइनल से पूर्व उसे इस बात की जानकारी हो जाये।

खेल विशेषज्ञ की समीक्षा

खेल विशेषज्ञ से मैच प्रारम्भ होने से पूर्व और मैच की समाप्ति के उपरान्त चर्चा/ समीक्षा कराना खेल पत्रकारिता के क्षेत्र के अन्तर्गत आता हैं। इस समीक्षा में मैच के महत्वपूर्ण पलों, टीम की हार – जीत के कारणों पर प्रकाश डालना, मैच के दौरान लिये गये फैसलों पर चर्चा करना कि परिस्थितियों के अनुसार वे कितने सही या गलत थे, मैच के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करना जोकि आम आदमी की समझ से परे हैं, आदि चर्चायें इसमें शामिल है।

खेलों से सम्बन्धित इतिहास

विभिन्न खेलों के आयोजन, मैच के परिणाम की जानकारी के साथ – साथ उससे सम्बन्धित इतिहास की जानकारी उपलब्ध करवाना इस के क्षेत्र के अर्न्तगत आता हैं। जैसे दैनिक जागरण द्वारा 29 वें ओलंम्पिक खेलों के प्रारम्भ हाने से एक माह पूर्व उल्टी गिनती प्रारम्भ कर दी थी और प्रतिदिन एक ओलंम्पिक खेल की जानकारी संक्षिप्त में देना प्रारम्भ कर दिया था। इसमे ओलंम्पिक खेलों के आयोजन स्थल, विजेता देशों का क्रम, भाग लेने वाले देश, खिलाड़ियों और कुल प्रतियोगिताओं की संख्या आदि महत्वपूर्ण जानकारियों से अवगत

कराया जाता था। इस प्रकार की जानकारी अब विभिन्न समाचार पत्रों द्वारा भी प्रकाशित की जाने लगी है। विभिन्न मैचों से पूर्व यह अवगत कराना कि दोनों टीमों के बीच कुल कितने मैच खेले गये, कौन सी टीम कितनी बार विजयी रही, उनका स्कोर क्या रहा, आदि जानकारियॉ उपलब्ध कराना खेल पत्रकारिता के क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।

प्रसिद्ध खिलाड़ियों के साक्षात्कार

समय – समय पर प्रसिद्ध खिलाड़ियों के साक्षात्कार लेना और उनको प्रकाशित करना खेल पत्रकारिता का ही का कार्य है। यह आवश्यक नहीं है कि साक्षात्कार टूर्नामेन्ट या मैच के प्रारम्भ में अथवा मैच के अंत में ही लिया जाये। साक्षात्कार कभी भी लिया जा सकता है और प्रकाशित किया जा सकता है, इससे उभरते हुए खिलाड़ियों को आवश्यक जानकारी के साथ साथ अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रेरणा प्राप्त हो सकती है।

विभिन्न कीर्तिमानों का प्रकाशन

मैच से पूर्व उस खेल से सम्बन्धित महत्वपूर्ण कीर्तिमान को संक्षिप्त में उजागृित करना कि अमुख कीर्तिमान कब, कहाँ, किसके द्वारा और किस टीम के विरुद्ध बनाया गया। मैच के दौरान बनने वाले नवीन कीर्तिमान को भी प्रकाश में लाना खेल पत्रकारिता का ही एक अंग है।

अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों के विषय में जानकारी देना

टीम में खिलाड़ियों का चयन उनके द्वारा पूर्व में किये गये प्रदर्शन के आधार पर किया जाता है। चयनकर्ता हर जगह जाकर खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर नज़र नहीं रख सकते है, इसके लिए उन्हें समाचार पत्रों, टी. वी. आदि का सहारा लेना पड़ता है। खिलाड़ियों के अच्छे प्रदर्शन को सभी के सामने लाने का कार्य खेल पत्रकारिता आसानी से पूर्ण कर सकती है। यह आवश्यक नहीं है कि हर मैच के उपरान्त ही उनके प्रदर्शन की जानकारी दी जाए, उनके अच्छे प्रदर्शन की जानकारी टूर्नामैन्ट के समाप्ति पर या फिर टीम के चयन से पहले भी दी जा सकती है।

विश्वप्रसिद्ध खिलाड़ियों की जीवनीयों का प्रकाशन

विश्वप्रसिद्ध खिलाड़ियों की जीवनी के प्रकाशन से ज्ञात होता है कि इस स्थिति तक पहुँचने के लिये उन्होंने कितना संघर्ष किया और किन परिस्थितियों का उन्हें सामना करना पड़ा। जीवन कभी भी एक समान नहीं रहता है इसमें उतार चढ़ाव आते ही रहते है यही स्थिति खिलाड़ियों के प्रदर्शन में होती हैं। जब उनके सामने ऐसी स्थिति आई तो उन्होंने इससे उबरने के लिए, प्रदर्शन में निरन्तरता रखने के लिए, खेल कौशल और क्षमता को बनाये रखने के लिए क्या किया, आदि बातों की जानकारी जीवनी के प्रकाशन से ही सकती है, साथ ही साथ नवीन खिलाड़ियों को उच्च स्तर का खिलाड़ी बनने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

खेल संघों से जुडी जानकारियॉ

विभिन्न खेलों का आयोजन सम्बन्धित खेल संघ या समितियों के द्वारा किया जाता है और उससे सम्बन्धित सभी जानकारियाँ इन्ही संघ के पास एकत्रित रहती है जैसे कि कोई भी मैच कब, कहाँ और किसके बीच खेला जाएगा, इससे पहले कितने मैच खेले जा चुके हैं, विभिन्न कीर्तिमान कब, कहाँ, किसके द्वारा और किसके विरूद्ध बनाये गये हैं आदि। इन खेल सघों से जुड़ी समस्त जानकारी जैसे इनका मुख्यालय कहाँ है, इनके अध्यक्ष व सदस्य कौन कौन हैं, बैठक कब होगी, मुख्य बिन्दु क्या है आदि को उपलब्ध कराने का कार्य खेल पत्रकारिता का है।

भूतपूर्व खिलाड़ियों के विषय में जानकारी

जब तक कोई भी खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन करता है या टीम में बना रहता है हर अखबार और मैगज़ीन की सुर्खियों में बना रहता है। देश या राज्य के लिए लगातार खेलते रहने पर उन्हे कभी किसी बात की दिक्कत नहीं होती है, लेकिन जब वे खेल से सन्यास ले लेते है तो उन्हे पूछने वाला कोई भी नही होता है। कई बार

ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जब खिलाड़ी को अपना मैडल या ट्रॉफी तक बेचनी पड़ जाती है। ऐसे भूतपूर्व खिलाड़ियों के बारे मे जानकारी कर उसे सामने लाने का और खेल सघं या सरकार से सहायता दिलाने का कार्य खेल पत्रकारिता के माध्यम से किया जा सकता है।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में विश्व में कहीं न कहीं, कोई न कोई खेल अवश्य ही होता रहता है। उसे खेलने वालों के साथ साथ आम लोग भी अपनी अपनी पसन्द के अनुसार खेलों मे रुचि लेने लगे है और उनसे जुड़ी खबरों/जानकारियों को पढ़ना पसन्द करते है। खेल और खिलाड़ियों से जुड़ी सभी खबरें खेल पत्रकारिता के दायरे में आती हैं और खेल पत्रकारिता के कारण ही ये सभी खबरें आम लोगों तक पहुँचती हैं। दिन पर दिन बढ़ते खेलों के आयोजन और बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए यही अनुमान लगाया जा सकता हैं कि आने वाले समय में खेलों मे पत्रकारिता की सम्भावनाएँ उज्जवल हैं।

सन्दर्भ

राम कृष्ण राजपूत, "फर्रुखाबाद में पत्रकारिता की परम्परा"
http://www.asthabharati.org/Dia_Oct%2005/bal.htm
http://www.robertniles.com/journalism/
http://www.indiastudychannel.com/resources/26246-Sports-Journalism-Match-Reporting.aspx
http://www.sportsjournalists.co.uk/